दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय
गोरखपुर-273001
(नैक प्रत्यायित 'B' श्रेणी)
सम्बद्ध
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

☎ & Fax : 0551-2334549
: 09792987700
e-mail : digvijayans@gmail.com
: dnpggkp@gmail.com
website : www.dnpgcollege.edu.in

दिनांक : 31.01.2019

समाचार स्वरूप प्रकाशनार्थ

आज दिनांक 31.01.2019 को महाविद्यालय के स्वर्ण जयंती वर्ष के उपलक्ष्य में शिक्षाशास्त्र विभाग के तत्वावधान में शिक्षा और मूल्य विषय पर व्याख्यान के अंतर्गत मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय की पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो. सुमित्रा सिंह ने कहा कि मूल्य जीवन की एक ऐसी अवधारणा है जो मानव का प्रथ प्रदर्शन करता है। लेकिन मूल प्रश्न यह है कि सबसे पहले हमारा जीवन मूल्यवान है। लेकिन प्रश्न यह है कि जो हम जीवन जीते हैं उनका वास्तविक मूल्य क्या है। इसके संदर्भ में उन्होने कहा कि शिक्षा ही वह अनमोल तत्व है जो मनुष्य को मूल्यपरक जीवन जीने की प्रेरणा देता है। लेकिन एक दुखद स्थिति यह है कि वर्तमान भौतिकतावादी परिवेश में समाज मूल्यविहीन होता जा रहा है। इन्होने यह भी कहा कि जिस प्रकार एक पुष्प सम्पूर्ण वातावारण में सुगंध बिखेर देता है उसी तरह एक मूल्यपरक व्यक्ति अपने मानवीय गुणों के आधार पर समाज में अपनी छाप छोड़ देता है। प्राचीन भारतीय समाज के ऋषि महर्षि मूल्यपरक जीवन जीते थे और उसी तरह के समाज की परिकल्पना भी उनके मन में थी। शिक्षा समाज का दर्पण होता है तथा मानव मूल्य उसी में प्रतिबिम्बित होते हैं। इसके लिए आवश्यक है कि हम प्राचीन मनीषियों के मूल्यों का जीवन में आत्मसात करें इसके लिए यह भी आवश्यक है कि हर व्यक्ति में समर्पण का भाव का भाव होना चाहिए और ऐसे व्यक्ति पर समाज गर्व करता है।

विशिष्ट वक्ता के रूप में बोलते हुए कला संकाय प्रभारी डॉ. वीणा गोपाल मिश्रा ने कहा कि शिक्षा एक प्रगतिशील प्रशिक्षण ही नहीं बल्कि एक उर्जा के साथ–साथ सम्पूर्ण समाज का प्राणवायु है। किन्तु कुछ परिस्थितयों के कारण इसमें परिवर्तन भी होता रहता है। हमारे प्राचीन शिक्षा केन्द्र तक्षशिला, नालंदा, बल्लभी, अपने मूल्यपरक शिक्षा के लिए विख्यात थे। किन्तु मुसलमान आक्रमणकारियें तथा अंग्रेजो ने भारतीय शिक्षा के मूल्यों को नष्ट करने का प्रयास किया और इनका उद्देश्य राजनीतिक स्वास्थ्य की पूर्ति था तथा इन्होने शिक्षा के स्वरूप को बाजारवादी बना दिया। लेकिन इसके लिए आवश्यक है कि सबसे पहले मनुष्य बने तब एक मूल्यपरक समाज की कल्पना साकार हो सकती है।

अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. शैलेन्द्र प्रताप सिंह ने कहा कि मूल्यपरक शिक्षा का उद्देश्य है बहुजन हिताय बहुजन सुखाय लेकिन इसके लिए आवश्यक है मनुष्य नैतिक तथा चारित्रिक रूप से दृढ हो तथा अपने अंदर से राग–द्वेष जैसे कुरीतियों का त्याग करें तथा अपने अंदर आध्यात्मिकता, नैतिकता तथा सदाचार का भाव पैदा करे तभी एक मूल्यपरक समाज की कल्पना संभव है।

कार्यक्रम की प्रस्ताविकी तथा आगत अतिथियों का स्वागत विभाग की प्रभारी श्रीमती निधि राय ने किया, संचालन विभागीय प्राध्यापक डॉ. अखण्ड प्रताप सिंह ने किया तथा आभार ज्ञापन डॉ. रूक्मिणी चौधरी ने किया। कार्यक्रम में डॉ. राजशरण शाही, डॉ. अरूण कुमार तिवारी, डॉ. धीरेन्द्र सिंह, डॉ. अर्चना सिह, डॉ. गीता सिंह, डॉ. सरोज शाही, डॉ. शुभ्रा श्रीवास्तव, श्रीमती जागृति विश्वकर्मा उपस्थित थे।

डॉ. (मुरली मनोहर तिवारी)
सूचना एवं जनसम्पर्क अधिकारी
मोबाइल नं–9452879449